23. १००८ श्री पार्श्वनाथजी

यक्ष
धरणेन्द्र

चिन्ह
सर्प

वर्ण
हरितवर्ण

यक्षिणी
पद्मावती

अर्घ

नीर गंध अक्षतानु, पुष्प चरू लीजिये।
दीप धूप श्री फलादि, अर्घतें जजीजिये।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख कृष्णा-२

गर्भकल्याणक

पोष कृष्णा-११

जन्मकल्याणक

पोष कृष्णा-११

तपकल्याणक

चैत्र कृष्णा-४

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री अश्वसेन
माता: वामादेवी

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

श्रावण शुक्ला-७

मोक्षकल्याणक